इराक़ की सरज़मीन से अर्ज़े हाल

जनाब शकील हसन शमसी साहब "राष्ट्रीय सहारा" देहली

ज़िन्दगी में कुछ ऐसे मवाक़े आते हैं जब आपको अपनी क़िस्मत पर नाज़ करने को दिल चाहता है। ऐसा ही लम्हा मेरी ज़िन्दगी में तीसरी बार आया। एक बार जब मैं हज पर गया और दूसरी बार जब मैं ईरान गया था और अब इराक़ के शहर कर्बला में वाक़े नवास-ए-रसूल हज़रत इमाम हुसैन[अ०] और उनके छोटे भाई हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़ों की मुनतज़िमा कमेटी ने जब मुझे जश्ने रबीउश्शहादत के छः दिवसीय प्रोग्राम में शिरकत के लिए दावत दी थी तो मैं ख़ुशी से झूम उठा। ये जश्न इमामे हुसैन[अ०] और हज़रत अब्बास के यौमे विलादत के सिलसिले में मुनअक़िद हो रहा है। इस जश्न में दुनिया के मुख़तलिफ़ गोशों से जिन उलमा, दानिश्वरों, मुफ़क्किरों और सहाफ़ियों को दावत दी गई थी उनमें रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा के सहाफ़ी के तौर पर मेरा नाम भी शामिल था। दावतनामे के साथ-साथ वीज़ा भी मौजूद था। हिन्दुस्तान से जिन लोगों को बुलाया गया था, उनमें जे०एन०यू० के मेरे दोस्त प्रोफ़ेसर ऐनुल हसन आब्दी, बंगलौर के समाजी और मज़हबी कारकुन आग़ा सुलतान और मैसूर के माहिर सर्जन डाक्टर मुहम्मद रज़ा भी शामिल हैं। मैं 16 जुलाई को गल्फ़ एयर की फ़्लाइट से बहरैन पहुँच गया। कर्बला के रौज़ों का इन्तेज़ाम देखने वाली कमेटी के नुमाइन्दे हमारे ख़ैरमक़दम के लिए मौजूद थे।

हम लोग नजफ़ से सीधे कर्बला के लिए रवाना हुए। हमारी गाड़ियाँ 180 किलोमीटर की रफ़्तार से चल रही थीं। रास्ते में कई जगहों पर चेकिंग हो रही थी, लेकिन हमारी गाड़ियों की कहीं चेकिंग नहीं हुई, क्योंकि उन पर ख़ास स्टीकर लगे हुए थे। नजफ़ से कर्बला का 90 किलोमीटर का सफ़र सिर्फ़ एक घण्टे में तैय हुआ, लेकिन कर्बला में दाख़िल होने के बाद हमको होटल पहुँचने तक आधा घण्टा लगा। हम जब कर्बला में दाख़िल हुए तो सबसे पहली नज़र हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़े पर पड़ी। ख़ुशी के मारे दम निकलने को था और आँखों में आँसुओं का समन्दर मौजज़न था। हम रौज़े की पुश्त पर से होते हुए नहरे फ़ुरात के किनारे पहुँचे। मैं देर तक नहरे फ़ुरात को ग़ौर से देख रहा था। आज फ़ुरात का पानी इस क़ाबिल नहीं है कि इसको बग़ैर साफ़ किए हुए पिया जा सके, लेकिन आज से दो सौ साल पहले तक इसका पानी इतना शफ़्फ़ाफ़ था कि नहर के अन्दर की ज़मीन भी दिखाई पड़ती थी। फ़ुरात में कुछ बच्चे नहा रहे थे, कुछ किनारों पर से झलांग लगा रहे थे और मैं रसूलुल्लाह[अ०] के घर के उन बच्चों को याद कर रहा था जो अल-अतश की सदाएं बलन्द कर रहे थे। मुझे इसकी लहरों में प्यासों पर बरसते हुए तीर नज़र आ रहे थे। फ़ुरात तेज़ी से रवाँ थी, लेकिन पता नहीं क्यों मुझे फ़ुरात पर एक अजीब सी उदासी छाई हुई लग रही थी, हालांकि हर रोज़ लाखों आदमियों की प्यास यही नहर बुझाती है, लेकिन पानी की हर मौज जैसे अपना रंग खो चुकी है। मेरा दिल चाहा कि फ़ुरात से मुकालमा करूँ और पूछूँ कि तुझे अलक़मा नाम के बादशाह ने सैकड़ों साल पहले तामीर किया था, उस वक़्त से लेकर अब तक न जाने कितने करोड़ लोगों की प्यास बुझा चुकी है। तू ही इस ख़ित्ते की लाइफ़लाइन है, तू ही तो न जाने कितनी सदियों से इस ख़ित्ते की आबियारी कर रही है, फिर भी

तू इस क़दर उदास क्यों है? मैं फ़ुरात से अभी सवाल पूछ ही रहा था रहा कि अचानक मुझको लगा फ़ुरात ने एक शेर की शक्ल में मुझे अपना जवाब अता किया-

अब रोज़ लाखों लोग पियें भी तो क्या मज़ा
मैं जिनको चाहती थी वह पानी न पी सके

नहरे फ़ुरात से गुफ़्तगू करने के बाद मैं होटल में दाख़िल हुआ, लेकिन यहाँ हमको ठहरना नहीं था सिर्फ़ लंच करना था। खाना खाने के बाद हम लोग अपने होटल के लिए रवाना हुए। वैसे तो कर्बला में रौज़ों के आसपास के इलाक़ों में गाड़ियाँ आने पर पाबन्दी है, लेकिन हमारी कारों को ख़ुसूसी छूट थी, इसलिए हमारी गाड़ियाँ ज़ाएरीन के हुजूम के दरमियान रेंगती हुई होटल की तरफ़ जा रही थीं। थोड़ी देर के बाद हम इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े से तीन सौ मीटर के फ़ासले पर क़ायम होटल अररायात में पहुँच गए। जिस प्रोग्राम में हम बुलाए गए थे उसकी इफ़्तेताही तक़रीब पाँच बजे थी, लेकिन हम लोगों को काफ़ी देर हो चुकी थी, हम लोग जल्दी-जल्दी गुस्ल करके इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े के लिए रवाना हुए और रौज़े पर सलाम करके सीधे ख़ातमुल अम्बिया हाल में पहुँच गए, जहाँ हमारा बेसब्री से इन्तेज़ार हो रहा था क्योंकि प्रोफ़ेसर एनुल हसन और मुझको इस सेमिनार की इफ़्तेताही तक़रीब में ही अपने मक़ालात पेश करना थे। हमारे लिए मुतरजिम का इन्तेज़ाम हो चुका था। इराक़ के नायब वज़ीर आज़म इस मौक़े पर ख़ुसूसी मेहमान थे। उनकी तक़रीर हुई, कई उलमा की तक़रीरें हुईं, कुवैत के मिनिस्टर फार इन्फ़ारमेशन और वहाँ के मेम्बर पार्लिमेण्ट ने अपने ख़यालात का इज़हार किया, फिर मुझे बुलाया गया। मैंने इमाम हुसैन और हिन्दुस्तान के उनवान से अपने ख़यालात का इज़हार किया और हिन्दुस्तान के बारे में कुछ दिलचस्प हक़ाएक़ हाज़िरीन से खचाखच भरे हाल में पेश किए। मैंने जब ये कहा कि आप लोग कर्बला में रहते हैं, लेकिन कई हज़ार मील दूर रहने के बावजूद कर्बला हमारे दिल में रहती है तो लोग बहुत ख़ुश हुए। मैंने अहले इराक़ को बताया कि हिन्दुस्तान का शायद ही कोई शहर ऐसा हो, जहाँ कर्बला नाम की कई इमारतें मौजूद न हों। लखनऊ जैसे शहर में तो कर्बला नाम की बीस पच्चीस तारीख़ी इमारतें हैं। मैंने जल्से में कहा कि हिन्दुस्तान के तूलो अर्ज़ में जितने हुसैनिया (इमामबाड़े) हैं, दुनिया के दूसरे किसी मुल्क नहीं होंगे। मैंने ये भी बताया कि कई ऐसी इमारतें भी हैं, जो हिन्दू अक़ीदतमन्दों ने इमाम हुसैन[अ०] की याद में बनवाई हैं। ये सब इत्तेलाआत अहले इराक़े के लिए हैरानकुन थीं। इसकी वजह ये है कि हिन्द व इराक़ के दरमियान रवाबित तक़रीबन ख़त्म हो गए थे, इसलिए दोनों मुमालिक की मौजूदा नसलें एक दूसरे के बारे में वाक़िफ़ नहीं हैं। मेरे बाद प्रोफ़ेसर ऐनुल हसन ने तक़रीर की और हिन्दुस्तान के हिन्दू शोअ्रा के कई अशआर की रौशनी में ये बताया कि हिन्दुस्तान के ग़ैर मुस्लिम अफ़राद इमाम हुसैन[अ०] से किस क़दर मुहब्बत व अक़ीदत रखते हैं।

बहरहाल तीन शाबान को हम कर्बला पहुँच कर बहुत ख़ुश थे, क्योंकि इमाम हुसैन[अ०] की रौज़े पर उनकी विलादत के जश्न में शरीक होना अपने आप में एक बड़ी सआदत है। पूरे कर्बला में झंडियाँ लगी थीं, सुर्ख़ परचम लहरा रहे थे, कुमकुमे रौशन थे और अवाम की तरफ़ से जुलूस निकाले जा रहे थे जिनमें शामिल बच्चे, जवान औरतें और बुज़ुर्ग अरबी के लोक गीत गा रहे थे। जुलूसों में शामिल लोगों ने अपने हाथ में शमएं भी उठा रखी थीं।

चार शाबान को हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़े पर शानदार जश्न हुआ। वहाँ ख़ालिस सोने की प्लेटों को जोड़ कर नए मीनार बनाए गए थे, जो कई दिन से ग़िलाफ़ में थे इस तक़रीब के दौरान ग़िलाफ़ उठाया गया। इस प्रोग्राम में एक लाख से ज़्यादा आदमी शरीक हुए। इन मीनारों की तामीर में 108 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल हुआ है और तक़रीबन तीन साल के अरसे में ये बनकर तैयार हुए हैं।

जहाँ तक इराक़ के हालात का सवाल है तो बड़ी अजीब सी सूरते हाल है। नजफ़ से लेकर कर्बला तक के सफ़र के दौरान हमको कहीं भी अमरीकी फ़ौज या अमरीकी गाड़ियाँ नहीं दिखाई पड़ीं। हर जगह इराक़ की फ़ौज, पुलिस और दहशतगर्दों से लड़ने वाली स्पेशल

टास्क फोर्स के लोग ही नज़र आए। कर्बला में हिफ़ाज़त का सारा इन्तेज़ाम मक़ामी पुलिस के हाथों में ही था। कर्बला में दाख़िल होने वाले हर रास्ते पर ग़ाड़ियों की तलाशी लेने के लिए चेकपोस्ट बने हुए थे और शहर के अन्दर हाल ये है कि मुक़द्दस रौज़ों तक जाने वाले हर रास्ते पर कम से कम चार जगहों पर पैदल चलने वालों की जामा तलाशी होती है। हम लोगों को ख़ुसूसी बैज फ़राहम किए गए हैं, इसलिए हमारी जामा तलाशी नहीं हुई लेकिन अगर हम अकेले निकलें और हमारे पास अपने बैज न हों तो हमको भी तलाशी देना पड़ती है। हम लोग अभी कर्बला में ही हैं और ये छः रोज़ा जश्न ख़त्म होने के बाद ही बग़दाद काज़मैन और नजफ़ जा सकेंगे। यहाँ न तो अंग्रेज़ी का अख़बार है न टी०वी० पर अंग्रेज़ी ख़बरें आती हैं, इसलिए दुनिया में क्या हो रहा है इसका इल्म हमको नहीं। कल देहली से हमारी अहलिया ने बताया कि बग़दाद में एक बम ब्लास्ट हुआ जिसमें 40 लोग मारे गए लेकिन यहाँ हम लोग बेख़बर थे। इस बारे में इमाम हुसैन मीडिया सेण्टर के एक सीनियर ओहदेदार हैदर मनकूशी से जब मैंने पूछा कि बग़दाद में क्या ब्लास्ट हुआ है तो उन्होंने कहा कि यहाँ तो धमाके होते ही रहते हैं और अब तो हमको उसकी आवाज़ भी सुनाई नहीं पड़ती क्योंकि हम मरने के लिए हर वक़्त तैयार रहते हैं शायद इन लोगों को बस तिलावते कलाम पाक, नमाज़ और ज़िक्रे हुसैन की आवाज़ ही सुनाई पड़ती है। उनकी इस बात ये लगा कि इराक़ वालों के दिल से मौत का ख़ौफ़ निकल चुका है और तारीख़ बताती है कि ऐसे ही हालात में तेग़ नाकाम होती है और रगे गुलू फ़तहयाब होती है। बाद में एक इराक़ी ने बताया कि धमाका बग़दाद में नहीं बल्कि फ़लूजा में हुआ था जो इराक़ के सुन्नी मुसलमानों का शहर है। सोचने की बात तो यही है कि दहशतगर्दों का ताल्लुक़ आख़िर किस फ़िरक़े से है जो कभी शियों को निशाना बनाते हैं और कभी सुन्नियों को। (बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 21 जुलाई 2010ई०)

इराक़ में मुँह छिपाए हैं अमरीकी फ़ौजें

वैसे तो इराक़ पर अमरीकी फ़ौजों का क़ब्ज़ा है लेकिन ताज्जुब की बात ये है कि कहीं भी अमरीकी फ़ौजें नज़र नहीं आईं। मैंने कर्बला से सामरा तक का 260 किलोमीटर का सफ़र किया और रास्ते में हर पाँच दस किलोमीटर के फ़ासले पर मौजूद सेक्योरिटी चेक प्वाइन्ट से भी गुज़रा जहाँ इराक़ी पुलिस और मुसल्लह अफ़वाज हाथों में ए०के० 47 लिए हुए मुस्तएदी के साथ गाड़ियों को चेक कर रहे थे। इन चेक पोस्टों पर चेकिंग इतनी सख़्त थी कि किसी क़िस्म का माद्दा भी अगर गाड़ी में मौजूद होता तो उसकी निशानदेही Explosive Detector फ़ौरन कर देता था। यहाँ तक कि दवा की गोलियों और पाउडर की मौजूदगी की इत्तेला भी ये मशीन फ़राहम कर देती है। इन चेक पोस्टों के आसपास बक्तरबन्द गाड़ियाँ मौजूद होती हैं जिनको "T-Walls" कहा जाता है। इन मज़बूत दीवारों पर ब्लास्ट का कोई असर नहीं होता। हर हिफ़ाज़ती नाके पर razor wire की बाढ़ भी लगी होती है। इस तेज़ धार वाले को तार को पार करने की कोशिश करने वाला लहूलहान भी हो सकता है। इन नाकों पर गो कि चेकिंग में कुछ ही सेकेण्ड लगते हैं फिर भी गाड़ियों की एक लम्बी क़तार हर चेकपोस्ट पर नज़र आती है। हम लोग चूँकि मक़ामाते मुक़द्दसा की मैनेजिंग कमेटी के मेहमान थे इसलिए हमारी गाड़ी को एक ख़ास गुज़रनामा (पास) दिया गया था जिसको दिखाने के बाद हमारी गाड़ी को कारों की लम्बी लाइन से हटाकर दूसरी राहदारी से भेजा जाता था। सामरा से हम लोग डेढ़ सौ किलोमीटर दूर 'बलद' गए लेकिन तब भी हम लोगों को कोई अमरीकी दिखाई नहीं दिया। इस तरह बलद से बग़दाद के सफ़र के दौरान भी कहीं अमरीकी फ़ौज का चेहरा दिखाई नहीं दिया। कर्बला से नजफ़ अशरफ़ के दरमियान भी यही हाल था। मेरी हैरानी की इन्तेहा नहीं थी क्योंकि उम्मीद के मुताबिक़ इराक़ की हर शाहराह पर कोई न कोई अमरीकी फ़ौजी टुकड़ी होना चाहिए थी। मैंने एक इराक़ी दोस्त से इसकी वजह पूछी तो उसने कहा कि अमरीकी फ़ौजियों का चेहरा दिखाई न देने की एक वजह तो ये है कि यहाँ के अवाम उन से बेहद नफ़रत करते हैं और अक्सर सिर्फ़ अमरीकी फ़ौज की मौजूदगी की वजह से फ़साद जैसी सूरते हाल पैदा हो गई है। दूसरी वजह ये है कि अमरीकी फ़ौजें अपना चेहरा इसलिए भी

नहीं दिखाती हैं कि वह अपनी हलाकतों की तादाद कम से कम रखना चाहती हैं। चूँकि इन सेक्योरिटी नाकों पर अक्सरो बेश्तर ख़ुदकश हमले होते रहते हैं, इसलिए अमरीकी हुक्काम ने बहुत चालाकी के साथ अपनी अफ़वाज को इस ख़तरे से बचा लिया है। मेरे दोस्त ने बताया कि ऐसा नहीं है कि अमरीकी फ़ौजें यहाँ से चली गई हैं या बैरकों में बैठी हैं वह हर सेक्योरिटी चेक पर मौजूद हैं लेकिन वह "T-Walls" के पीछे रहती हैं और अगर हमला होता है तो उसमें इराक़ी फ़ौज के जवान मारे जाते हैं और अमरीकी पूरी तरह महफ़ूज़ रहते हैं, वह धमाके के बाद बाहर निकलते हैं और आसपास की आबादियों को सरासीमा करने के लिए हवाई फ़ायरिंग करते हैं। इस तरह की चालाकी से अमरीकी अफ़वाज की शरहे अमवात में काफ़ी कमी आई है।

इत्तेफ़ाक़ से मेरी मुलाक़ात एक ऐसे बुज़ुर्ग इराक़ी से हुई जो अच्छी ख़ासी उर्दू बोल सकते हैं। वह कई दहाइयों से हिन्दुस्तान से इराक़ जाने वाले ख़ोजा मुसलमानों को ज़ियारत के सिलसिले में अपनी ख़िदमात फ़राहम करते हैं। उनसे जब मैंने कहा कि अब तो अमरीकी फ़ौज के इराक़ से जाने के दिन आने वाले हैं और उम्मीद की जा रही है कि साल भर के अन्दर ही अमरीका यहाँ से अपनी फ़ौजें हटा लेगा तो उन्होंने नाउम्मीदी के लहजे में कहा, अगर अमरीका को यहाँ से जाना ही होता तो आता क्यों? अमरीकी यहाँ से कभी नहीं हटेंगे, आप भी देखेंगे और आपके बच्चे भी देखेंगे कि अमरीकी यहीं रहेंगे। उन्होंने कहा कि इन अमरीकियों ने इराक़ को बर्बाद कर दिया। जब से अमरीकी आए हैं यहाँ शिया-सुन्नी की बात होने लगी है, वरना इस से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि वह शाह फैसल के ज़माने से इराक़ के हालात देखते आ रहे हैं और उस वक़्त से आज तक कभी भी इराक़ में शिया-सुन्नी का सवाल यहाँ के समाज में मौजूद नहीं रहा। कोई नहीं पूछता कि आपका मसलक क्या है लेकिन इन अमरीकियों ने जब से यहाँ क़दम रखे हैं यहाँ शिया और सुन्नी आबादियों की बात होने लगी है। उन्होंने कहा कि शिया-सुन्नी का सवाल सद्दाम के ज़माने में भी नहीं उठा। सद्दाम का जो भी मुख़ालिफ़ था चाहे वह शिया हो हो या सुन्नी सद्दाम ने उसको बख़्शा नहीं चाहे वह ख़ुद सद्दाम के दामाद ही क्यों न हों और जो भी सद्दाम का वफ़ादार था चाहे वह शिया हो या सुन्नी, मज़े में रहा। इस बुज़ुर्ग इराक़ से बात करके मुझे बहुत सुकून मिला क्योंकि उनकी बातों में ऐसा दर्द झलक रहा था जो शायद हर इराक़ी के दिल में मौजूद था।

इराक़ के तक़रीबन हर शहर में बिजली की शदीद क़िल्लत है और दरज-ए-हरारत 52 डिग्री सेलसियस तक की गर्मी में A.C. के बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारना बहुत मुश्किल है, इसलिए हर घर में जनरेटर ज़रूर मौजूद है, पेट्रोल सिर्फ़ 17 रुपये लीटर होने की वजह से जनरेटर चलाना और रखना आसान है लेकिन ये जनरेटर इतने ताक़तवर तो नहीं कि सारे घर को रौशन कर सकें इसलिए लोग परेशान नज़र आते हैं। हिन्दुस्तानी वफ़्द के एक अहम रुक्न सुल्तान आग़ा के एक इराक़ी दोस्त ने जब हम सब लोगों को दावत पर बुलाया तो बिजली ने बहुत परेशान किया मजबूरन हम सबको बाहर दालान में बैठना पड़ा। मैंने उस इराक़ी से मालूम किया कि बिजली की ये सूरते हाल क्या हमेशा से ही ऐसी है तो उसने जवाब दिया कि नहीं ऐसी हालत कभी नहीं थी— अमरीकी हमले से क़ब्ल इराक़ के लोग पावरकट के नाम से भी वाक़िफ़ नहीं थे लेकिन जब अमरीकियों ने हमला किया तो हमारे सारे पावर स्टेशनों को उसने उड़ा दिया और शहर कई दिन तक अंधेरे में डूबा रहा। उसने कहा कि अमरीकियों ने शहरी तन्सीबात और फ़ौजी तन्सीबात में ज़रा सा भी फ़र्क़ नहीं किया और दीवानावार हमले किए। उनको जहाँ इराक़ की तरक़्क़ी का कोई निशान दिखाई दिया, उसको तबाह करने में उन्होंने ज़रा सी भी झिझक महसूस नहीं की। उस इराक़ी ने कहा कि जबकि इसके पहले इराक़ आठ साल तक ईरान के साथ जंग करता रहा लेकिन ईरानी फ़ौजों ने कभी भी इराक़ के शहरी ठिकानों को नुक़सान नहीं पहुँचाया लेकिन अमरीका के नाम नेहाद बाउसूल फ़ौजी जनरलों ने शहरों और छावनियों में कोई इम्तियाज़ नहीं किया।

ईरान का ज़िक्र आया तो यहाँ ये भी बताता चलूँ

कि इराक़ में हर रोज़ हज़ारों ईरानी ज़ायरीन मक़ामाते मुक़द्दसा की ज़ियारत के लिए आते हैं और यहाँ के बाज़ारों में उनके दम से बड़ी रौनक़ रहती है। इराक़ में ईरानी करेन्सी तूमान की काफ़ी आओभगत की जाती है यहाँ उसके एक्सचेन्ज नहीं करवाना पड़ता बल्कि बाज़ारों में ईरानी करेन्सी कुबूल करने को हर दुकानदार तरजीह देता है। अगर आप ईरानी तूमान दिखाएं तो दुकानदार क़ीमत में तख़फ़ीफ़ भी कर देता है। सब ही दुकानदार फ़ारसी के काम चलाउ अलफ़ाज़ भी बोल लेते हैं, इसलिए ईरानी ज़ायरीन को सामान ख़रीदने में काफ़ी आसानी हो जाती है। इराक़ के सियासती उफ़ुक़ पर भी ईरानी रंग काफ़ी हद तक असरअन्दाज़ नज़र आता है, ख़ास तौर पर शोला बयान, जोशीले और जाँबाज़ मज़हबी रहनुमा मुक़तदा सद्र के बारे में कहा जाता है कि वह ईरानी हुकूमत के काफ़ी क़रीब हैं। उनके पास इराक़ की पार्लिमेण्ट में 40 सीटें हैं और उनके इत्तेहाद के पास कुल 70 सीटें हैं। अभी तक उनकी जानिब से हरी झण्डी न दिखाए जाने की वजह से इराक़ में नई हुकूमत की तश्कील नहीं हो सकी है। इराक़ की सियासी सूरते हाल अभी तक शशोपंज की कैफ़ियत बनी हुई है और इसकी वजह से इराक़ में एक अजीब सा आलम है। वहाँ एलेक्शन हुए पाँच महीने हो चुके हैं लेकिन कोई भी इत्तेहाद, हुकूमत बनाने की पोज़ीशन में नहीं है, इसलिए अमरीकियों के और ज़्यादा मज़े हैं वह ऐसी सूरते हाल का भरपूर फ़ायदा उठा रहे हैं।

जहाँ तक दहशतगर्दी का सवाल है तो वह अपनी जगह जारी है। सख़्त चौकसी और कड़े हिफ़ाज़ती बन्दोबस्त के बावजूद कहीं न कहीं धमाके करने में दहशतगर्द कामयाब हो जाते हैं। यहाँ चौकसी का ये आलम है कि मुर्दों तक को Explosive Detector से गुज़ारा जाता है। नजफ़ कर्बला और काज़मैन में ये आम रवाज है कि कुर्बो जवार में मरने वालों की लाशों को दफ़्न किए जाने से पहले अक़ीदतन रौज़ों के अन्दर ले जाया जाता है लेकिन दहशतगर्दी की बढ़ती हुई कारवाइयों की वजह से यहाँ लाई जाने वाली लाशों को रौज़े के बाहर ही कांधे से उतार कर रख दिया जाता है फिर फ़ौजी जवान Explosive Detector लेकर आते हैं और मुर्दे की जाँच करते हैं और मुर्दे को कांधा देने वालों की भी जांच की जाती है लेकिन कोई बुरा नहीं मानता न तो कांधा देने वाले न मुर्दे के वरसा, क्योंकि सब जानते हैं कि अब इराक़ में ज़िन्दा रहने के लिए ये लाज़मी हो गया है कि मुर्दों की भी जामा तलाशी हो।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 4 अगस्त 2010ई०)

कब ख़त्म होगा वादि-ए-नूर पे छाया सितम का अंधेरा

मुझे इराक़ से वापस आए हुए हफ़्ते से ज़्यादा हो गया लेकिन अभी तक वहाँ की ख़ुश्बू मेरे एहसास पर छाई हुई है। इराक़ियों की ज़बरदस्त मेहमान नवाज़ी और मिलनसारी ने दिलो दिमाग़ पर ऐसे नुक़ूश छोड़े हैं कि जो तमाम उम्र मेरे साथ रहेंगे। मेहमान नवाज़ी और ख़ुशअख़लाक़ी का ये नमूना एक ऐसे आलम में देखने को मिला, जबकि मुल्क में हर तरफ़ अद्मे तहफ़्फ़ुज़ की फ़िज़ा है, बमों के धमाकों का कभी न ख़त्म होने वाला सिलसिला जारी है, क़दम-क़दम पर फौज और पुलिस के अफ़सर तलाशी के लिए मौजूद हैं और महंगाई ने आम आदमी का नातक़ा बन्द कर रखा है। वैसे तो हमारी मेहमान नवाज़ी के लिए इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े की मैनेजिंग कमेटी "अतबतुल हुसैनिया" के चीफ़ मोहतमिम सईदुद्दीन साद और हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़े "अतबतुल अब्बासिया" के इंजीनियर सुलाल हर वक़्त मौजूद थे, लेकिन इसके बावजूद कुछ दूसरे इराक़ी ऐसे थे, जो हिन्दुस्तानी वफ़्द की दावत करने को बेताब थे। इन ही में से एक थे इराक़ी फ़ौज की सरीउल हरकत फ़ोर्स के मेजर जनरल अदनान। मेजर जनरल अदनान से हमारा तआरुफ़ हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़े पर मुनअक़िद होने वाली इस तक़रीब में हुआ था, जिसमें 108 किलो सोने की प्लेटों से बनाए गए नए मीनारों का इफ़्तेताह होने वाला था।

इन मीनारों पर बहुत ही ख़ूबसूरत अन्दाज़ में कुरआन की आयात तहरीर की गई हैं और बीच में ख़ते कूफ़ी में पंजतन के नाम तहरीर हैं। इन मीनारों को देखकर लगता था कि जैसे दुआ के लिए दो हाथ बलन्द

हो गए हैं, जो अल्लाह तआला से दुआ कर रहे हैं कि ऐ रब्बे करीम इस मुक़द्दस सरज़मीन को ज़ालिमों से नजात दे। मेजर जनरल अदनान ने हम लोगों के एज़ाज़ में एक होटल में एक शानदार ज़ियाफ़त का एहतेमाम किया। मेजर अदनान को इराक़ के लोग काफ़ी एहतेराम की नज़र से देखते हैं, इनका सबसे बड़ा कारनामा ये माना जाता है कि उन्होंने 2007 में कर्बला के मुक़द्दस शहर में उस मुमकिना ख़ून-ख़राबे को रोकने में बहुत अहम रोल अदा किया था, जो मुक़तदा सद्र की महदी मलेशिया और इराक़ी अफ़वाज के दरमियान होने वाला था। इस वाक़िए की तफ़सील यूँ बयान की जाती है कि महदी मलेशिया के सैकड़ों हथियारबन्द सिपाही इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े की ज़ियारत के लिए पहुँचे तो वहाँ मौजूद हिफ़ाज़ती अमले ने उन से कहा कि वह हथियार रख के अन्दर जाएं, क्योंकि रौज़ों के अन्दर किसी को भी हथियार ले जाने की इजाज़त नहीं (यहाँ तक कि इराक़ी अफ़वाज और मुसल्लह पुलिस के मेम्बरान भी अपने हथियार बाहर ही छोड़कर रौज़े में दाख़िल होते हैं) मुक़तदा सद्र के लोगों ने इस शर्त को मानने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनको डर था कि अगर उन्होंने हथियार रख दिए तो चन्द लम्हों में अमरीकन फ़ौजी उनको घेर कर ख़त्म कर देंगे। जैसा कि क़ारेईन (पाठक) जानते हैं कि इराक़ पर अमरीकी हमले के बाद सिर्फ़ मुक़तदा सद्र ही एक ऐसे मज़हबी रहनुमा थे, जिन्होंने जारेह फ़ौज के साथ ज़बरदस्त मारका आराई की थी। यहाँ तक कि नजफ़ अशरफ़ में जब वह पनाहगुज़ीं थे तो अमरीकी फ़ौजियों ने वहाँ भी धावा बोल दिया था और हज़रत अली[अ०] के रौज़े पर भी गोलाबारी शुरु कर दी थी, जिसके बाद शियों के मरजए तक़लीद आयतुल्लाह सीस्तानी[म०ज़ि०] ने मुदाख़ेलत करके मुक़तदा सद्र की मलेशिया को नजफ़ अशरफ़ ख़ाली करने के लिए कहा था। अमरीकियों की नज़र में इराक़ में उनके सबसे बड़े दुश्मन मुक़तदा सद्र ही बाक़ी रह गए थे और इन ही के मलेशिया के लोग कर्बला में इमाम हुसैन[अ०] को ख़िराजे अक़ीदत पेश करने के लिए पहुँचे थे। एक तरफ़ रौज़े में दाख़ले के उसूल थे और दूसरी जानिब मुक़तदा सद्र की मलेशिया के तहफ़्फ़ुज़ का मामला था। हालात इतने बिगड़ गए कि दोनों तरफ़ से हवाई फ़ायर होने लगे और रौज़े के आसपास के इलाक़ों में ज़बरदस्त भगदड़ मच गई। ऐसे नाज़ुक मौक़े पर मेजर जनरल अदनान ने बहुत ही समझदारी के साथ मुआमलात को संभाल लिया और दोनों फ़ौजों के बीच टकराव की नौबत नहीं आई। अब मुक़तदा सद्र ने मुसल्लह जिद्दोजेहद तर्क कर दी और मुल्क के जमहूरी निज़ाम में शामिल हो गए हैं। पार्लिमेण्ट में उनके एलाइंस को 70 सीटें मिली हैं और ख़ुद उनकी पार्टी सदर मूवमेन्ट को 40 नशिस्तें हासिल हुई हैं।

इराक़ के दौरे के दरमियान मुझे महसूस हुआ कि कर्बला और उसके आसपास के इलाक़ों में मुक़तदा सद्र की काफ़ी मुख़ालेफ़त है, जबकि कूफ़ा और बग़दाद में उनको अवाम की ज़बरदस्त हिमायत हासिल है। नजफ़ में भी उनका ख़ास असर है, लेकिन उनके मुख़ालिफ़ीन का भी वहाँ ज़ोर है। असल में मुक़तदा सद्र को अमरीकन बहुत ज़्यादा नापसन्द करते हैं, और चाहते हैं कि किसी भी तरह मुक़तदा सद्र को मसनदे इक़्तेदार से दूर रखा जाए। इसके अलावा अमरीकी हुक्काम की भी ये कोशिश है कि आयतुल्लाह मोहसिनुल हकीम के पोते अम्मारुल हकीम की पार्टी नेशनल इराक़ी एलाइंस को भी इक़्तेदार से महरूम रखा जाए, क्योंकि ये दोनों लोग ही ईरान के इस्लामी इन्क़ेलाब से मुतास्सिर हैं, और अमरीका इराक़ में किसी दूसरे इस्लामी इन्क़ेलाब को पनपते नहीं देख सकता। अमरीकियों की तरफ़ से मुसलसल मुदाख़लत के बाइस इराक़ में पाँच महीने गुज़र जाने के बावजूद अभी तक हुकूमत की तश्कील नहीं हो सकी है। अभी हाल में ही अमरीका के सदर बाराक हुसैन ओबामा ने एक ख़त भेजकर इराक़ में नई हुकूमत की तश्कील के सिलसिले में इराक़ के सबसे बड़े मज़हबी रहनुमा आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यद अली हुसैनी सीस्तानी[म०ज़ि०] से मदद माँगी। आयतुल्लाह सीस्तानी एक ऐसे आलिमे दीन हैं जिन्होंने ख़ुद को हमेशा सियासत से अलग रखा है। सद्दाम के दौर में वह इसी लिए हुकूमत के इताब से महफ़ूज़ रहे कि उन्होंने सियासत में मुदाख़लत नहीं की। वह एक सादा सी ज़िन्दगी गुज़ारने

वाले रूहानी रहनुमा हैं। हर साल करोड़ों रुपये उनके पास ख़ुम्स और सहमे इमाम[अ०] के नाम पर आते हैं, जिसके ज़रिए वह दुनिया भर में चल रहे फ़लाही इदारों की मदद करते हैं, लेकिन ख़ुद उनके पास अपना कोई मकान नहीं है नजफ़ की एक पतली से गली में एक किराए के मकान में सीस्तानी साहब रहते हैं। घर में मामूली क़ालीन और रूई के गद्दे बिछे हुए हैं, जिस पर दुनिया के आला तरीन लोग भी आकर बैठते हैं। ग़िज़ा निहायत सादा है और उनके शार्गिद ने तो ये बताया कि उनके कान्धों पर पिछले बारह साल से एक ही अबा है जिसको वह धो-धोकर पहनते हैं, लेकिन इस सादगी से उनकी शान में कोई कमी नहीं आती, बल्कि वक़ार में मज़ीद इज़ाफ़ा होता है। ये भी उनकी आला ज़रफ़ी है कि मुल्क पर क़ाबिज़ अमरीकी फ़ौज के अफ़सरों या अमरीकी हुक्काम से आज तक उन्होंने मुलाक़ात नहीं की। उनके नाम बराक ओबामा के ख़त के मुख़्तलिफ़ मतालिब निकाले जा रहे हैं, कुछ लोगों का कहना है कि अमरीका मुक़्तदा सद्र और अम्मारुल हीकम को अलग-थलग करने की ग़रज़ से आयतुल्लाह सीस्तानी को बीच में ला रहा है, लेकिन इराक़ के आम लोगों का ख़याल है कि आयतुल्लाह सीस्तानी इस मामले में अभी भी मदाख़लत नहीं करेंगे और ख़ासकर अमरीका के सदर की अपील पर तो वह बिल्कुल ध्यान नहीं देंगे, क्योंकि ऐसा करना उनकी शान के ख़िलाफ़ होगा।

मेरे ख़याल में आयतुल्लाह सीस्तानी नई हुकूमत की तश्कील में कोई रोल भले ही अदा न करें, लेकिन इसमें कोई हरज नहीं है कि वह मुख़्तलिफ़ सियासी धड़ों के बीच मसालेहत करवाने की कोशिश करें और एक ऐसी क़ौमी हुकूमत बनने का रास्ता हमवार करें, जिसमें सब ही सियासी पार्टियों के लोग शामिल हों। इस वक़्त इराक़ के हालात बहुत धमाकाख़ेज़ हैं, लॉ-क़ानूनियत उरूज पर है और सियासी अद्मे इस्तेहकाम का फ़ायदा मुल्क दुश्मन अनासिर उठा रहे हैं। अमरीकी सदर बराक ओबामा ने इक़्तेदार संभालने के बाद जार्ज बुश की पॉलीसियों से इन्हेराफ़ की अलामत के तौर पर ये एलान कर दिया था कि वह इराक़ में मौजूद फ़ौजों की तादाद में इस साल के आख़िर तक पचास हज़ार की कमी कर देंगे और 2011[ई०] में इराक़ से अमरीकी फ़ौजें पूरी तरह हट जाएंगी, लेकिन इराक़ी अवाम का यही मानना है कि अमरीकी इराक़ से कभी नहीं जाएंगे, इसलिए मुमकिन है कि इराक़ के ख़राब और तश्वीशनाक हालात का बहाना बनाकर अमरीकी सदर अपने वादे से मुकर न जाएं? इराक़ के लोगों का ये भी मानना है कि अमरीका के साबिक़ सदर जार्ज बुश और मौजूदा सदर बराक हुसैन ओबामा की पॉलीसियों में कोई फ़र्क़ नहीं है, बस फ़र्क़ इतना है कि बुश को अपनी बात मनवाने के लिए फ़ौजी मुहिम पर यक़ीन था और ओबामा थोड़ी नर्मी के साथ उसी पॉलीसी को आगे बढ़ा रहे हैं, जिसका सिर्फ़ एक ही मक़सद है कि इराक़ के अवाम को लूटा खसोटा जा सके। हर इराक़ी बाशिन्दा आज यही सोच रहा है कि कब ख़त्म होगा सितम का ये सियाह दौर और कब वापस जाएंगी अमरीकी फ़ौजें?

इराक़ में हमारी मेहमान नवाज़ी करने वालों में फ़लाह नाम के नौजवान बहुत पेश-पेश थे, जिनसे हमारे दोस्त आग़ा सुलतान के देरीना ताल्लुक़ात हैं। इनके वालिद का एक शानदार होटल है। इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े से एक किलोमीटर के फ़ासले पर उनका शानदार बंगला है, जहाँ अंगूर की बेलें और खजूर के दरख़्त बहुत बड़ी तादाद में हैं। फ़लाह ने अपने घर में दावत की तो ये भी दिखाया कि खजूर के बलन्द क़ामत दरख़्तों पर किस तरह चढ़कर खजूरें तोड़ी जाती हैं। फ़लाह ने मेरे लेपटाप से ख़बरें और मज़ामीन भेजने के लिए इण्टरनेट कनेक्शन का इन्तेज़ाम किया, जिसके सबब मुझे बेहद आसानी हो गई और मैं अपने क़ारेईन (पाठकों) के साथ मुसलसल राब्ते में रह सका। इनके अलावा बग़दाद के एक दोस्त मजीद ने भी ज़बरदस्त मेहमान नवाज़ी का सुबूत दिया और 'बलद' में वाक़े इमाम अली नक़ी[अ०] के बेटे सै० मुहम्मद मज़ार की निगराँ कमेटी के लोगों ने भी इस क़दर ख़ातिर की हमारे पास शुक्रिये के लिए अलफ़ाज़ कम पड़े।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 11 अगस्त 2010[ई०])